Notification No.: 570/2024

Date of Award.: 25-November-2024

Name of Scholar: Mateen Ahmad

Name of Supervisor: Prof. A. R. Musawwir

Name of Department/Faculty: Hindi, Faculty of Humanities & Languages, JMI.

Topic of Research: RENU KE SAHITYA PAR AADHARIT FILMON ME BIMBON KA ADHYAYAN

Keywords: Motion Pictures, Images, Films, Literature, Cinematography, Sound, Aural & Visual Senses, intellectual Images, Regional Cinema & literature, Film Adaptation.

Finding:-

फणीश्वरनाथ रेणु हिंदी कथा-साहित्य में आंचलिक साहित्य को स्थापित करने वाले साहित्यकार के रूप में विख्यात है। फणीश्वर नाथ रेणु लोक कथाकार के रूप में प्रसिद्ध हुए और उनकी लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती चली गई। फ़िल्मकार उनके साहित्य को आधार बनाकर फिल्म निर्माण की ओर आकृष्ट हुए। यह अनायास नहीं है कि रेणु के साहित्य के प्रति फिल्मकारों में आकर्षण दिखाई पड़ता है।

साहित्यकार लिखित शब्दों के माध्यम से बिंबों को पाठकों के मानस पटल पर उकेरता है, वहीं फ़िल्मकार इन बिंबों को रजत-पटल पर जीवंत कर अनुभव के धरातल पर साकार करने का प्रयास करता है। सिनेमा की यह विशेषता है कि वह जटिल से जटिल संवेदनात्मक उद्देश्य को भी कलात्मक सरलता से वृहत्तर दर्शक समुदाय तक पहुंचाने की क्षमता रखता है। रेणु के कथा साहित्य में प्रयुक्त बिंब बड़ी सहजता और सघनता से फ़िल्मों में रूपांतरित होने का गुण रखते हैं। रेणु के कथा साहित्य को आधार बनाकर कई फिल्मों, टेलीफ़िल्मों और टी वी धारावहिकों का निर्माण हुआ जिनमें 'तीसरी क़सम', पंचलेट, मैला आँचल प्रमुख हैं। रेणु के साहित्य पर आधारित फिल्मों में कलात्मकता प्रधान है और व्यावसायिकता गौण है। इन फिल्म रूपांतरणों में आंचलिकता का तत्व तो मुखर हुआ है लेकिन रूप, गंध एवं भाव का प्रभाव साहित्यिक कृति की तरह सघन नहीं है। फिल्म निर्माण के समय फ़िल्मकार कलात्मक स्वतंत्रता ले लेता है इसलिए कई बार फ़िल्म साहित्यिक कृति से भिन्न प्रभाव रखती है। 'तीसरी क़सम' फ़िल्म में भी यह स्वतंत्रता ली गई है। इस फ़िल्म में ज़मीदार का एक बहुत सशक्त और प्रभावशाली पात्र रचा गया है जिसकी उपस्थिति फ़िल्म के ग्राफ़ को बहुत ऊपर ले जाती है। यह फ़िल्म मूल कहानी का एक प्रकार से पुनर्सृजन है।

दृश्य-श्रव्य माध्यम होने के कारण फिल्म दर्शकों को ऐन्द्रिक रूप से अधिक प्रभावित करती है। रेणु का कथा साहित्य भी पाठक को ऐंद्रिक रूप से गहराई तक स्पर्श करता है। सारांशत: कहा जा सकता है कि रेणु के कथा साहित्य पर आधारित फ़िल्में कलात्मकता के स्तर पर सफल हैं और रेणु के साहित्य में फ़िल्मांतरण की अपार संभावना मौजूद है।